P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वैदिक साहित्य : पुराण ग्रन्थों में दैवीय शक्ति का दर्शन

नीलम कान्त
असिस्टेन्ट प्रोफेसर व
विभागाध्यक्षा,
चित्रकला विभाग,
श्रीमती बी0डी0 जैन, गर्ल्स
पी0जी0 कॉलेज,
आगरा, उ.प्र., भारत

सारांश

वैदिक साहित्य के पुराण ग्रन्थों में भी जगह–जगह भगवती पार्वती शक्ति का उल्लेख इन्ही भावों की पुष्टि करते हुये किया गया है। और पुराण में इनको शिव की ज्ञानमयी शक्ति कहा गया है। एक अन्य स्थान पर इनको 'परा' अथवा 'परम शक्ति' कहा गया है वो सर्वत्र व्याप्त है और जो 'मायिन' महेश्वर की माया है। उनको जगत का नियंत्री, सर्व शक्तियों की जननी, विश्वमाता, संसार की कल्याणकारी आदि कहकर उनकी आराधना की गई है। उनको आदि प्रकृति और वेदों का उद्गम माना गया है परन्तु कहीं भी उनके शिव के घनिष्ठ साहचर्य की दृष्टि से ओझल नहीं होने दिया गया है और सदैव ही उनको 'शिव–प्रिया' मानकर ही स्मरण किया जाता है। सौर पुराण में देवी की उपासना का विशेष दिवस 'उल्का नवमी' था जो अब 'महानवमी' के नाम से प्रख्यात है। विश्वास किया जाता है कि इस दिन उन्होंने महिषासुर का वध किया था। स्कन्द जन्म की कथा का वर्णन भी इसी पुराण में मिलता है। इसी पुराण में 'तारका सुर' 'त्रिपुरदाह' तथा 'दक्षयज्ञ' की कथा का पूर्ण विवरण दिया गया है। अर्द्धनारीश्वर के रूप में जब शिव की पार्वती के साथ उपासना की गई तब शिव को अर्द्धनारीश्वर की उपाधि दी गई और कहा जाता है कि ब्रह्मा के वरदान पर पार्वती शिव के साथ स्थायी रूप से सयुक्त हो गई थी। मत्स्य पुराण में ही 'शिव चतुर्दशी' की उपासना का विधान दिया गया है जिसमें शिव के साथ पार्वती की उपासना की जाती थी। यहाँ पार्वती को भवानी कहा गया है। बसंत ऋतु में शुक्ल पक्ष की तृतीया को शिव–पार्वती का विवाह हुआ था। यह संस्कार वास्तव में सती के सम्मान के लिये ही था। और शिव की उपासना उनके पति होने के नाते की जाती थी। इसके अतिरिक्त इस पुराण में निम्न कोटि के स्त्री देवताओं का भी उल्लेख मिलता है जिनको 'मातृकाये' कहा गया है। जिनकी उत्पत्ति शिव ने दानवों के विरूद्ध संग्राम में अपनी सहायता के लिये पैदा किया था। जो क्रूर रक्त पीने वाली है। इस रूप में देवी का नाम 'विन्ध्यानिलय' है। इसी पुराण में गणेश के सम्बन्ध में कहा है कि गणेश पार्वती के मैल द्वारा रचित थे जो गंगा में डुबा देने पर प्राणवान हो गये। इसी पुराण में स्कंन्द जन्म की कथा का भी वर्णन मिलता है। अग्नि पुराण में देवी की एक सौम्य और दयाशील स्त्री देवता के रूप में कल्पना की गई है। देवी की उपासना के सम्बन्ध में अग्नि पुराण में कहा गया है कि जब उनका पार्वती रूप में स्तवन होता है तब उनके सदा भीषण रूप की ओर संकेत किया जाता है जिस रूप में वह दानवों का संहार कर महामाता कहलायी। देवी की क्रूर और भयाभह आकृति वाली देवता के रूप में कल्पना ब्रह्मवैवेत पुराण में की जाती है उसके साधारण नाम चण्डिका, काली, दुर्गा इत्यादि है। इसी पुराण में 'वैष्णवी' रूप में देवी की उपासना का उल्लेख हुआ है। देवी की 'माहेश्वरी' रूप में जब कल्पना की जाती थी तो उन्हें पशु बलि दी जाती थी। ग्रामों में दुर्गा की उपासना होने के कारण इनको ग्राम देवता भी कहा जाता है। देवी के सम्बन्ध में मार्कण्डेय पुराण में कहा गया है कि दानवों के विरूद्ध चढ़ाई करने से पहले देवी ने अपने आपको अम्बिका से पृथक कर लिया ओर इस तरह उनका रंग काला पड़ गया इसमें देवी को महाप्रिय कहा गया है। ब्रहाण्ड पुराण में देवी को वस्त्राविहीन बताया है तथा दिगम्बर की उपाधि दी है। लिंग पुराण में उमा महेश्वर व्रत का वर्णन मिलता है। तथा दक्ष–यज्ञ की कथा का भी उल्लेख हुआ है। वायु पुराण की कथा सौर पुराण से मिलती जुलती है। इस पुराण में कहा गया है कि देवी प्रारम्भ में आधी श्वेत तथा आधी काली थी। बाद में उन्होंने अपने को दो रूपों में विभक्त कर लिया श्वेत व काले में। ब्रह्म पुराण में देवी को सच्चे ज्ञान में बाधक बताया है। मातृकाओं के सम्बन्ध में बारह पुराण में कहा गया है कि मातृकायें अथवा देवियाँ, स्वयं महादेवी के अट्टास से उत्पन्न हुई थी। शिव पुराण की कथा ब्रह्म पुराण से मिलती जुलती है जिसमें पदम पुराण की भाँति पार्वती के विवाह के पूर्व की है। जिसमें कामदेव अपना पुष्प वाण शिव पर चलाते जिससे शिव क्रोधित होकर उनको अपने तीसरे नेत्र से भस्म कर देते हैं। यही कथा भविष्य पुराण में उपलब्ध है। इस प्रकार देवी पार्वती की पुराणों में खूब महिमा गाई गई है। देवी की जहाँ अलग स्वतन्त्र देवी के रूप में पूजा होती है तो उन्हे ठीक सदा शिव के समान ही पंचमुखी दज भुजाधारिणी दिखाया जाता है तथा चेहरे के भाव सौम्य मुद्रा में होते हैं एवं उनके आयुध भी सदाशिव की भाँति होते हैं।

मुख्य शब्द : पुराण, वायु, अग्नि, ब्रह्मवैवत पुराण, सौर पुराण, लिंग पुराण, पार्वती, शिव, देवी शक्ति, विष्णु पुराण, दक्ष यज्ञ। सती।

प्रस्तावना

उत्तर वैदिक काल में और रामायण, महाभारत के युग में और उसके बाद भी लगातार पुराणों की रचना होती रही जिनमें राजवंश सम्बन्धी ऐतिहासिक विवरणों का संग्रह रहता था पुराणों में भी देव कथाओं से लेकर देवी आद्यशक्ति का शिवप्रिया पार्वती की कथाओं का उल्लेख भी वखूबी मिलता है। विष्णु पुराण में शंकर जी ने अपने स्त्री रूप को सौम्य तथा असौम्य कई रूपों में विभाजित किया दर्शाया गया है। वही अग्नि पुराण में दुर्गा की जो स्तुति प्राप्त होती है उसमें उन्हें सौम्य तथा दयाशील रूप में ही कल्पित किया गया है। वे एक ऐसी देवी है जिसका सत्कार सारा विश्व करता है और उनसे अनुग्रह की प्रार्थना करता है। वायुपुराण में देवी को आधी काली व आधी श्वेत रूप में तथा दक्ष कथा का वर्णन है तथा लिंग पुराण में 'उमा महेश्वर' ब्रत तथा दक्ष यज्ञ विंध्वस की कथा का उल्लेख है। ब्रह्मपुराण में कहा गया है कि जब विष्णु ने देवी को अपनी सहचरी बनाने के लिए कहा तब शिव ने इन्कार कर दिया और बड़े कड़े शब्दों में देवी की निन्दा की। उन्होंने बताया सौर पुराण में इनको शिव की पुराण कि वह सच्चे ज्ञान की प्राप्ति में बाधक है, वह योग का द्वार बन्द करने वाली है वह मोक्ष की इच्छा की साक्षात ध्वंस रुपिणी है वह महान अज्ञान फैलाती है इत्यादि। ब्रह्मवैवर्त पुराण में देवी देवी की इस पुराण में क्रूर और भयावह आकृति बाली देवता के रूप में कल्पना की जाती है, उसके नाम 'चण्डिका', काली, दुर्गा इत्यादि है। वह ज्वलंतमुखी, तीक्ष्ण दृष्टा करालाकृति है और एक या अनेक सिंहो पर आरूढ़ रहती है। उसकी आठ अथवा बीस भुजायें है और उनमें वह विविध प्रकार के अस्त्र धारण करती है। सौर पुराण में इनको शिव की पत्नी–शक्ति कहा गया है, इसी पुराण में गणेश जन्म व कार्तिकेय की जन्म का भी वर्णन मिलता है। मार्कण्डेय पुराण में कहा गया है कि देवी महामाया रुपिणी है। वह परब्रह्म की शक्ति है। बड़े–बड़े ज्ञानियों के मन को भी वह भ्रान्त कर देती है। उसी से यह चराचर जगत उत्पन्न होता हैं वही अविद्या के रूप में संसार में बन्धन का हेतु है और वही परम विद्या के रूप में मोक्ष की प्रदात्री भी है।

शोध पत्र का उद्देश्य

धार्मिक प्रवृत्ति में देवी का अपना एक स्थान है जिसका वर्णन साहित्यकारों ने अनेकों ग्रन्थों के माध्यम से इस जगत को दिया है। देवी की पुराणों में भी खूब महिमा गाई गई है देवी की पुराणों में की गई प्रतिष्ठा से सबको अवगत करना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

शोध विषय क्षेत्र

पुराण

भारतीय धार्मिक विश्वासों तथा अचार–विचारों का पूर्ण विकास पुराणों के समय में हुआ। पुराण साहित्य स्वतः काफी प्राचीन ग्रन्थ है और अर्थ वेवद तक में पुराण एवं इतिहास का उल्लेख किया गया है। यह माना जा सकता है कि उत्तर वैदिक काल में और रामायण महाभारत के युग में और उसके बाद भी लगातार पुराणों की रचना होती रही जिनमें राजवंश सम्बन्धी ऐतिहासिक विवरणों का संग्रह रहता था। आजकल जो पुराण ग्रन्थ उपलब्ध है वे अंधिकाश पूर्व कालीन पुराण ग्रन्थों के ही नव निर्मित संस्करण हैं और उनमें धार्मिक व्यवस्था और देवकथाओं को भी शामिल कर लिया गया है। लगभग एक आध ग्रन्थ को छोड़कर सभी बड़े पुराण जो आजकल उपलब्ध है कि रचना ईसा की चौथी से छटी शताब्दी तक हो चुकी थी।

विष्णु पुराण

प्राचीन पुराणों में हमें देवी के ब्राह्मण धर्म में विकसित सौम्य तथा लौकिक क्षेत्र में विकसित घोर, दोनों ही रूपों के दर्शन हो जाते है। इस पुराण में कहा गया है कि शंकर ने अपने स्त्री रूप को सौम्य तथा असौम्य कई रूपों में विभाजित किया। शिव पार्वती को विष्णु और लक्ष्मी से अभिन्न माना गया है। इसी पुराण में एक अन्य स्थान पर विष्णु को पिनाकघृक कहा गया है जो शिव की विशिष्ट उपाधि है। एक दूसरी जगह उल्लेख है कि दोनों ही एक रूप है।[1]

अंग्नि पुराण

इस पुराण में दुर्गा की जो स्तुति प्राप्त होती है उसमें उन्हें सौम्य तथा दयाशील रूप में ही कल्पित किया गया है। वे एक ऐसी देवी है जिसका सत्कार सारा विश्व करता है और उनसे अनुग्रह की प्रार्थना करता है। अग्नि पुराण में शिव और पार्वती की प्रतिदिन उपासना का वर्णन है। परन्तु वर्ष में कुछ दिन शिव की उपासना के विशेष दिन माने जाते थे जब यह उपासना विशेष विधियों द्वारा सम्पन्न होती थी। शिव और विष्णु के पारस्परिक सबन्धों में अग्नि पुराण में सन्दर्भ आया है कि शिव विष्णु के स्त्री रूप पर मुग्ध हो गये और उस माया के लिये उन्होंने पार्वती को भी छोड़ दिया था। अन्त में विष्णु ने ही इनका मोह दूर किया था। देवी की उपासना के सम्बन्ध में अग्नि पुराण में कहा गया है कि जब उनका पार्वती के रूप में स्तवन होता है तब प्रायः सदा ही उनके भीषण रूप की ओर संकेत किया जाता है जिस रूप में वह दानवों करती है और महामाता कहलाती है।[2]

वायु पुराण

वायु पुराण में कथा आती है कि देवी पहले आधी श्वेत तथा आधी काली थी फिर उन्हें दो रूपों में विभक्त कर लिया, श्वेत और काले रूप में। वायु पुराण में जब देवी पार्वती के रूप का स्तवन होता है तब प्रायः सदा ही उनके भीषण रूप की ओर संकेत किया जाता है जिस रूप में वह दानवों का संहार करती है और महामाता कहलाती है। वायु पुराण की दक्ष कथा के अनुसार दक्ष से शिव को आमन्त्रित न करने का कारण पूछा इस पर दक्ष ने उत्तर दिया कि वह ग्यारह रुद्रों को छोड़कर और किसी रूद्र को नहीं जानते और वह यज्ञ का सारा सम्मान विष्णु ही देगें, जो यज्ञ के पति हैं इसी बीच दक्ष पुत्री जो शिव के साथ विहाई गयी थी, स्वयं भगवान शिव से पूछती है कि उन्हें यज्ञ में क्यों नहीं बुलाया गया इस पर शिव ने उत्तर दिया कि देवताओं मे तो यह प्राचीन प्रथा थी कि वे यज्ञ में उन्हें कोई भाग नहीं देते थे और वह स्वंय इस स्थिति से सन्तुष्ट थे। आगे चलकर कथा में कहा गया है कि सती के अनुरोध करने पर शिव अपना

अधिकार पाने के लिए कुछ प्रयास करने के लिए राजी हुये। सती का यज्ञ मे जाना तथा देह त्याग की सूचना पर दक्ष को दण्ड देने के लिए उन्होने एक भंयकर जीव वीरभद्र की सृष्टि की, उधर सती के क्रोध से भद्रकाली की सृष्टि हुई जो वीरभद्र के सहायतार्थ उसके साथ गई तथा दक्ष यज्ञ विघ्वस किया। इस में यह भी कहा गया है कि शिव–पार्वती के दीर्घ काल तक सहवास करते रहने से इन्द्र के मन में भय उत्पन्न हुआ और उन्होंने अग्नि को उसमें विघ्न डालने के लिये भेजा। अग्नि गये और शिव का वीर्य पृथ्वी पर जा गिरा। इस पर पार्वती क्रोधित हो गई और दण्ड स्वरुप अग्नि को उस बीज को धारण करने को बाघ्य किया। इसके बाद अग्नि ने उसे गंगा को दिया और गंगा ने उसे शरवण नदी में 'डाल दिया–जहाँ स्कन्द का जन्म हुआ तथा कृतिकाओं ने उसे पाला।[3]

लिंग पुराण

लिंग पुराण में 'उमा महेश्वर' ब्रत का वर्णन मिलता है। इस पुराण में दक्ष यज्ञ की कथा का संक्षेप में वर्णन मिलता है–शिव का दक्ष के यज्ञ में भाग न मिलने पर सती यज्ञ में जाने का अनुरोध शिव से करती है शिव आज्ञा दे देते है वहाँ उनका तिस्कार होता देख सती दक्ष यज्ञ मे योगग्नि मे देह त्याग कर देती जिससे क्रोधित शिव वीर भद्र को जन्म देते है जो दक्ष यज्ञ को विघ्वंस कर देता है।[4]

ब्रह्म पुराण

ब्रह्मपुराण में शिव का उपहास भी किया गया है। पार्वती की माता मैना बडे ही अपमान सूचक शब्दों में शिव का उपहास करती है। उनकी दृष्टि में शिव एक गिरे हुये भिखारी है जिसके पास अपनी नग्नता छुपाने के लिये एक वस्त्र भी नही है जिनका साहचर्य हर किसी के लिए लज्जात्मक है विशेषकर पार्वती के लिये जिसने उन्हें अपना पति चुना था और इन सब लाछनो को शिव सर्वधा उचित मानकर स्वीकार कर लेते है। अभिवादन के सम्बन्ध में ब्रह्म पुराण में कहा गया है जब पार्वती का स्वंयवर हो रहा था तो शिव पंचशिव धारी शिशु के रूप में प्रकट होते है तथा पार्वती उन्हें तुरन्त पहचान लेती है और उनकों ही अपना पति चुनती है। उस समय अपने अज्ञान से इन्द्र ईष्याविश कुपित हो उठते है और शिशु पर प्रहार करने के लिए अपना वज्र उठाते है। परन्तु उसी समय उनकी भुजा स्तम्भित हो जाती है तथा उनका अभिमान पूर्णरूप से चूर्ण हो जाता है। ब्रह्म पुराण में कहा गया है कि जब विष्णु ने देवी को अपनी सहचरी बनाने के लिए कहा तब शिव ने इन्कार कर दिया और बड़े कडे शब्दों में देवी की निन्दा की। उन्होंने बताय कि वह सच्चे ज्ञान की प्राप्ति में बाधक है, वह योग का द्वार बन्द करने वाली है वह मोक्ष की इच्छा की साक्षात ध्वंस रुपिणी है वह महान अज्ञान फैलाती है इत्यादि। इससे स्पष्ट होता है कि इस रूप में देवी की उपासना को अत्यन्त गर्हित माना जाता था। ब्रह्म पुराण में स्कन्द जन्म की कथा का उल्लेख मिलता जिसे शिव के वीर्य को अग्नि में तथा अग्नि द्वारा गंगा तट पर कृतिकाओं को दे दिया जहाँ उनका जन्म हुआ। दक्ष वज्ञ की कथा ब्रह्म पुराण में बिल्कुल सौरे पुराण से मिलती जुलती है। ब्रह्म पुराण के अन्य अध्याय में यज्ञ विध्वंस स्वयं भगवान शिव करते है। इसका कारण यह बतलाया गया है कि दक्ष द्वारा शिव का अनादर सती को आस्हय हुआ और उन्होंने यज्ञाग्नि में कूद कर अपने प्राण त्याग दिये। ब्रह्म पुराण में एक अन्य स्थान पर कथा है कि जब सती अग्निकुंड में अपनी जान दे देती है तो क्रोध में शिव ने दक्ष तथा अन्य उपस्थित महर्षियों को श्राप दे दिया इस पर दक्ष ने भी शिव को प्रतिश्राप दे दिया। अन्त मे ब्रह्मा ने दोनों को शांत किया और दक्ष ने शिव का उचित सम्मान कर उन्हें श्रेष्ठ देव माना। 'मदन दहन' की कथा का वर्णन भी इस पुराण में मिलता है।[5]

ब्रहाण्ड पुराण

देवी के बारे में इस पुराण में कहा गया है कि वह सर्वधा वस्त्रविहीन है और इसी से उनको दिगम्बर की उपाधि मिली है। दक्ष यज्ञ की कथा भी ब्रह्मण्ड पुराण में दोहराई गयी है। तथा ऊषा अनुरूद्ध की कथा भी इस में आती है।[6]

मार्कण्डेय पुराण

देवी के विभिन्न रूपों को एक ही मातृ शक्ति से सम्बन्धित करने और इस शक्ति को जगत की आदि कारण भूत महामाया या परब्रहम की शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय मार्कण्डेय पुराण में संकलित देवी माहात्मय को है। यह देवी माहात्म्य 'दुर्गा शप्तशती' नाम से आज भी देवी के भक्तों का कंठहार बना हुआ है। इसमें कहा गया है कि देवी महामाया रुपिणी है। वह परब्रह्म की शक्ति है। बड़े–बड़े ज्ञानियों के मन को भी वह भ्रान्त कर देती है। उसी से यह चराचर जगत उत्पन्न होता हैं वही अविद्या के रूप में संसार में बन्धन का हेतु है और वही परम विद्या के रूप में मोक्ष की प्रदात्री भी है। वह नित्य है किन्तु जब वह देवों के कार्य की सिद्धि के लिये अविर्भूत होती है तो उसे उत्पन्न हुआ कहा जाता है–

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदम् ततम्।
देवाना कार्य सिद्धियर्थ भाविर्भवति सा यदा।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।

वही साख्य में वर्णित आद्य प्रकृति है तथा सत और असत वस्तुओं की जननी है। विष्णु शिव, इन्द्र, वरूण आदि देवों में जो भी शक्ति तथा सामर्थ है वह सब उसी का रूप है। इसी पुराण में महिषासुर वध के लिये प्रत्येक देवता के शरीर से निकले तेज के पूंजीभूत होने से उसकी उत्पत्ति बताई गई है। इसी पुराण मे देवी को ही चेतना, वृद्धि, निद्रा, क्षुधा, छाया, शक्ति, तृष्णा, शान्ति, लज्जा, श्रद्धा, कान्ति, दया तथा स्मृति आदि बताया गया है। सभी देवियों को एक ही माहशक्ति पार्वती से सम्बन्धित करने का मार्कण्डेय पुराण का प्रयास श्लाध्य है। देवो की स्तुति पर, पार्वती के शरीर से चण्ड, मुण्ड, शुंभ, निंशुभ तथा महिषासुर आदि राक्षसों का विनाश करने के लिये अम्बिंका का जन्म होता है। अम्बिका का ही 'कौशिकी'' भी नाम है। शरीर से उसके निकल जाने पर पार्वती काली हो जाती है। मद्यपान के सम्बन्ध में कहा गया है कि सम्भवतः उनको मद्य भी चढ़ाया जाता था क्योंकि उन्हें मद्य प्रिय था इसलिये उन्हें मद्यप्रिय भी कहा गया है और महिषासुर से युद्ध करते समय मदिरापान करके वह तरोताजा दम होती थी। अम्बिका के ललाट से 'भद्र काली' का जन्म होता हैं। चण्ड मुण्ड का वध करने से उनका नाम 'चामुण्डा' पड़ता

है। अम्बिका के ही शरीर से चंडिका या शिवदूती' का भी जन्म होता है। युद्ध में अम्बिका की सहायता करने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, कार्त्तिकेय आदि देवों की शक्तियों भी अनेक शरीर से निकल कर आती है। और जब शुभ देवी को ताना देता है कि वे इस प्रकार दूसरों के बल पर गर्व कर रही है तो वे कहती है कि मैं तो संसार की एक मात्र शक्ति हूँ और दूसरा कौन है? ये सब मेरी ही विभूतियाँ है और शुंभ के देखते–देखते सारी शक्तियाँ अम्बिका के शरीर में लीन हो जाती है। देवी विच्यांचल निवासिनी, रक्तदन्तिका, शताक्षी, शांकभरी, दुर्गा, भीमादेवी तथा भ्रामरी आदि देवियों को भी अपने ही विभिन्न रूप एव विभूतियाँ घोषित करती है। इसी पुरण में पार्वती ने दुगा रूप में रक्तबीज राक्षस का वध किया।[7]

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण

देवी की इस पुराण में क्रूर और भयावह आकृति बाली देवता के रूप में कल्पना की जाती है, उसके नाम 'चण्डिका', काली, दुर्गा इत्यादि है। वह ज्वलंतमुखी, तीक्ष्ण दृष्टा करालाकृति है और एक या अनेक सिंहो पर आरूढ़ रहती है। उसकी आठ अथवा बीस भुजाये है और उनमें वह विविध प्रकार के अस्त्र धारण करती है। जिस समय उनकी उपासना होती है, उनको सर्वश्रेष्ठ देवता माना जाता है, और ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि सभी देवता उसकी आराधना करते है। उसकी शक्ति स्वरूप का अब इतना विकास हो गया था कि उसको शिव की ही नहीं अपितु सभी देवताओं की शक्ति माना जाने लगा। ब्रह्मवैवेर्त पुराण में 'वैष्णवी' रूप में देवी की उपासना का उल्लेख हुआ है। देवी की माहेश्वरी रूप में जब कल्पना की जाती थी तो उन्हें पुशबलि दी जाती थी। इस पुराण में स्पष्ट कहा गया है कि दुर्गा की उपासना अनेक ग्रामों में होती थी। इसी कारण उनको ग्राम देवता भी कहा जाता था। ठीक यही नाम उन स्थानीय स्त्री देवताओं का भी था जिनकी उपासना आदि वासी जातियों में प्रचलित थी। इस पुराण में जब देवी के प्रिय पशुबलियों का उल्लेख किया गया है तब उनमें नरबलि (जिसका यहाँ एक विशेष नाम 'मर्यात' दिया गया है) सबसे अधिक प्रिय बताई गई है। नरबलि के लिये उपयुक्त प्राणी छाटने के सम्बन्ध में भी विस्तृत आदेश दिये गये है, जिससे ज्ञात होता है कि उस समय तक नरबलि देने की प्रथा लुप्त हो गई थी। बलि के लिये ऐसे युवा पुरुष की आवश्यकता थी, जो मातृ–पितृ विहीन हो, जो रोग मुक्त हो, दीक्षित हो और सदाचारी हो। उसको उसके बन्धुओं से खरीद लिया जाता था और यह भी आवश्यक था कि वह स्वंय खुशी से बलि चढ़ाये जाने के लिये राजी हो। जो कोई ऐसी बलि देवी को देता है उससे देवी अत्यन्त प्रशन्न होती है और उस पर देवी का अनुग्रह होना निश्चित है। सचमुच ही यहाँ हम एक अत्यन्त क्रूर और भयावह देवी का साक्षात्कार करते है जो रक्त और मास वलियों में आनन्द लेती है जिसका स्वरूप तथा जिसकी उपासना सामान्य ब्राह्मण धर्म के इतना प्रतिकूल है कि हम यह निष्कर्ष निकाले बिना नही रह सकते कि इस देवता और उसकी उपासना की उत्पत्ति सर्वथा आयतर स्त्रोतों से हुई। ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है कि जब विष्णु ने शिव से देवी को अपनी सहचरी बनाने के लिये कहा, तब शिव ने इन्कार कर दिया और बड़े कड़े शब्दों में देवी की निन्दा की। उन्होंने कहा कि वह सच्चे ज्ञान की प्राप्ति में बाधक है वह योग का द्वार बन्द करने वाली है वह मोक्ष की इच्छा की साक्षात् ध्वंसकपिणी है वह महान अज्ञान फैलाती है, इत्यादि। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उस रूप में देवी की उपासना को अत्यन्त ग्रहित माना जाता था। इस ग्रन्थ में तन्त्रों का नाम लिया गया है जिससे स्पष्ट हो जाता है कि उस समय तक तन्त्र ग्रन्थों की रचना हो चुकी थी।[8]

सौर पुराण

शिव की पत्नी के दार्शनिक रूप में इनका साहचर्य विकास सौर पुराण में दिखाई देता है। सौर पुराण में उनको शिव की ज्ञान मयी शक्ति कहा गया है। जिसके साथ व जिसके द्वारा वे सृष्टि की रचना करते है। और अन्त में उसका संहार करते है यह शक्ति शिव के इस कार्य में विभिन्न अवसरों में अनेकों रूप धारण करती है। एक अन्य स्थान पर उनको 'परा' अथवा 'पराशक्ति 'कहा गया है जो सर्वत्र व्याप्त है और जो 'मायिन' महेश्वर की माया है। शिव की शक्ति अथवा माया के रूप में वह वास्तव में शिव से भिन्न नहीं है। इन दोनों के साररूपेण इस अभेद को भी स्पष्ट कर दिया गया है। जो अज्ञानी है। वे ही इनसे भेद करते है न कि जो सत्य को जानते है। उनका परस्पर संबंन्ध ऐसा ही है जैसा अग्नि और उसकी ज्वलन शक्ति का। एक अन्य स्थान पर पार्वती स्वयं अपने आपको शिव से अभिन्न बताती है। और यह भी कहा गया है उन दोनों की एकता वैदान्त से स्पष्ट हो जाती है। शिव के साहचर्य के रूप में देवी, जैसे शिव को परमपिता कहा जाता है उसी तरह देवी को महामाता कहा गया है। अनेक स्तुतियों में उनके इस रूप का गान हुआ है। उनको उनमें जगत की नियंत्री,सर्व शक्तियों की जननी, विश्वमाता, संसार की कल्याण कारी आदि कहकर उनकी अराधना की गई है। उनके आदि प्रकृति और वेदों का उद्गम माना गया है परन्तु कहीं भी उनके शिव के घनिष्ठ साहचर्य की दृष्टि से ओझल नही होने दिया गया है और सदा ही उनको शिव प्रिया मानकर ही स्मरण किया जाता है। ''अंनग त्रयोदशी'' के दिन भगवान 'शिव' ने 'काम' को भस्म किया था और पुराण में इस दिन की उपासना विधि का वर्णन किया गया है। शिव सहधर्मिनी की पूजा भी उन्ही के साथ की जाती थी परन्तु इसके अतिरिक्त एक विशेष विधि भी थी जिसमें वह दोनों साथ–साथ पुजे जाते थे और वह थी 'उमामहेश्वर ब्रत' की विधि इसका वर्णन सौर पुराण में दिया गया है। स्वतन्त्र देवता के रूप में एक और जहाँ उनके पार्वती के रूप का स्तवन होता है वही दूसरी और उनके भीषण रूप की ओर संकेत किया जाता है जिस रूप में वह दानवों का संहार करती है और महामाता कहलाती है। देवी की उपासना स्वतन्त्र रूप से होती रही उनका अलग मत बना, अलग साहित्य और अलग ही श्रुतिग्रन्थ, इन्ही श्रुतिग्रन्थ के अपरकालीन संस्करण तन्त्र', कहलाये। सौर पुराण में 'कौलो' का नाम तक लेकर उल्लेख किया गया है जो बाद में शाक्तो के एक उपसम्प्रदाय के रूप में पाये जाते है। देवी की सदा एक क्रूर और भयावह आकृति वाली देवता के रूप में कल्पना की जाती है। उसके साधारण नाम, चण्डिका, काली, दुर्गा इत्यादि है। वह ज्वलन्त मुखी,

तीक्ष्ण दृष्टा, करालाकृति है और एक या अनेक सिंहों पर आरूढ़ रहती है। उसके आठ व बीस भुजायें है और उनमें वह विविध प्रकार के अस्त्र धारण करती है। देवी की उपासना का विशेष दिवस 'उल्फा नवमी' था जो अब 'महानवमी' के नाम से प्रख्यात है। विश्वास किया जाता है कि इस दिन उन्होंने महिषासुर का वध किया था। इस पूजा का वर्णन भी सौर पुराण में उपलब्ध है। सौर पुराण में गणेश को वास्तव में शिव का रूप बताया है। इसी पुराण में स्कन्द जन्म की कथा का उल्लेख हुआ है कि शिव पार्वती के दीर्घ कालीन सहवास से उनकी सन्तान के बारे में भय उत्पन्न हुआ इस पर देवताओं ने अग्नि को उनके सहवास मे भंग डालने भेजा तो अग्नि पार्वती के वाहन सिंह को देखकर डर कर भाग गये तब यह बात देवताओं ने शिव से कही और शिव से पार्वती से सन्तान ने होने के लिये प्रार्थना की तब शिव ने यह स्वीकार कर और अपना वीर्य अग्नि को दिया, अग्नि ने गंगा को जिसे सहन न कर सकने के कारण गंगा ने कृतिकाओं को दे दिया वही स्कन्द का जन्म हुआ तथा इस पर पार्वती शाशवत् रूप में देवताओं को निःसन्तान होने को श्राप देती हे तथा यही कथा का अन्त हो जाता है। सौर पुराण में तारकासुर की कथा 'त्रिपुरादाह' का भी वर्णन मिलता है। तथा मदन दाह का भी उल्लेख किया गया है। सौर पुराण में दक्ष यज्ञ की कथा का भी पूर्ण विवरण है अन्त में स्वयं दक्ष शिव की अराधना करके परम भक्त बन गये।[9]

मत्स्य पुराण

मत्स्य पुराण में पार्वती को जगन्याता, सर्वशक्तियों की अधिष्ठात्री तथा कल्याणकारी कहा गया है। किन्तु इसी पुराण में अन्यत्र उनके उस घोर रूप का भी स्मरण किया गया जिसमें वे दानवों का संहार करती है। अर्द्धनारीश्वर रूप में जब शिव की पार्वती के साथ उपासना की गई तब शिव को यही उपाधि दी गई है। इसी पुराण में आगे चलकर यह भी कहा गया है कि ब्रह्मा के वरदान से पार्वती शिव के साथ स्थायी रूप में संयुक्त हो गई थी। 'शिव चतुदर्शी' शिवो वासना का सबसे बड़ा दिन है। इस दिन की पूजा की विस्तृत वर्णन मत्स्य पुराण में दिया गया है।[5] इस दिन पूर्ण उपवास रखा जाता है तथा इससे पहले भी केवल एक समय भोजन किया जाता था। प्रातःकाल शिव की उमा के साथ कमल, पुष्प मालाओं, धूप, चन्दनलेप आदि से पूजा की जाती थी। एक वृषथ, सुर्वणघट, श्वेतवस्त्र, पंचरत्न, विविध प्रकार के भोजन, वस्त्र आदि ब्राह्मणों को दान दिये जाते थे और शिव से उनके अनुग्रह के लिए प्रार्थना की जाती थी। अन्त में कुछ योग्य शैव भक्तों को आमन्त्रित करके उनका विविधत सत्कार किया जाता था। यह इस दिन की पूजा की सामान्य ढंग था परन्तु जब यह तिथि कुछ विशेष महीनों में पड़ती थी तब कुछ अन्य संस्कार की किये जाते थे और उनमें विशेष उपहार भी चढ़ाये जाते थे। मत्स्य पुराण में एक और संस्कार की चर्चा की गई है जिसमें शिव पार्वती की एक साथ ही पूजा होती थी। यहाँ पार्वती को भवानी कहा गया है। यह वसंतऋतु में शुक्ल पक्ष की तृतीया को सम्पन्न होता था। इसी दिन सती का भगवान शिव के साथ विवाह हुआ था। यह संस्कार वास्तव में सती के सम्मान के लिये ही था। और शिव की उपासना उनके साथ उनके पति होने के नाते ही की जाती थी। पूजा में फल, धूप, दीप और नवैध चढ़ाये जाते थे, पार्वती की प्रतिभा को दूध तथा सुगन्धित जल से स्नान कराया जाता था और तदन्तर देवी की अभिवादन किया जाता था। मत्स्य पुराण में शिव को एक विलास प्रिय देवता के रूप में स्त्रीरूपी विष्णु पर मुग्ध होते दिखाया गया है पार्वती शिव पर उनके कामुक होने का आक्षेप करती है तब सम्भवत इस लाइन का आधार इस घटना की स्मृति है। तत्कालीन साम्प्रादायिक द्वेश भावना के कारण शिव और उनकी उपासना की प्रति रूद्विवादियों में 'द्वेश–भावना' उत्पन्न हुई। कई स्थानों में शिव की स्पष्ट निन्दा की गई है।[10]

मत्स्य पुराण में स्वयं पार्वती शिव को उलाहना देती है कि वह महाघूर्त है, उन्होंने सर्पो से अनेक जिहवल हर्पथक बात करनी सीखा है, अपने ललाट के चन्द्रमा से हृदय का कालापन लिया है, भस्म से स्नेह भाव पाया है, अपने वृषभ से दुबुर्द्धि पाई है, शमशान वास से उनमें निर्भीकत्व आ गया है और नग्न रहने से उन्होंने मनुस सुलभ लज्जा को खो दिया है। कपाल धारण करने से वह निर्धृण हो गये हैं और दया तो उनमें रह ही नहीं गई है। आगे चलकर पार्वती ने उनको साफ–2 'स्त्री लम्पट' कहा है जिस पर कड़ी दृष्टि रखने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त अनके निम्न कोटि की स्त्री देवी का उल्लेख मिलता है जिनको 'मात्काए' कहा गया है और जिनकी उत्पत्ति के विषय में यह माना जाता है कि उनको भगवान शिव ने दानवों के विरूद्ध संग्राम में अपनी सहायता के लिये पैदा किया था। वह क्रूर रक्त पीने वाली है और उनका स्वरूप लगभग वैसा ही है जैसी आदिवासी जातियों द्वारा उपस्थित स्थानीय स्त्री देवताओं का इस रूप में देवी का नाम 'विन्ध्यानिलय' है जिससे यह फिर स्पष्ट व्यक्त होता है कि उन्होने विध्य प्रदेश में पूजी जाने वाली किसी देवी को आत्मसात कर लिया था।

'मदन दहन की कथा में ब्रह्मा के आदेश पर देवताओं का शिव से पार्वती का जो पिछले जन्म में सती थी से विवाह कराने का प्रयास प्रारम्भ किया ताकि इनसे जो सन्तान उत्पन्न हो, वह उनकी सेना का नेतृत्व कर सके। पार्वती भी शिव को वर रूप में प्राप्त करने के लिए तपस्यारत थी। देवताओं ने कामदेव को शिव का ध्यानाच्युत करने आई पार्वती के प्रति उनमें अनुराग पैदा करने के लिय भेजा परन्तु जैसे ही कामदेव ने अपना बाण सज्जित किया, वैसे ही भगवान शिव ने अपने चित को किंचित विक्षुब्ध जान अपने नेत्र खोले और सामने कामदेव का देखकर क्रोध से भर गये। उसी क्षण उनके तृतीय नेत्र से एक ज्वाला निकली, जिसने काम को वही भस्म कर दिया बाद में पार्वती के अनुरोध से विरह व्यधिता काम पत्नी रति पर दया करके शिव ने काम को फिर जीवित कर दिया, परन्तु अंग का रूप उसे नहीं मिला तभी से काम अंनग कहलाता है।

अन्धक वध की कथा में शिव का माहकाओं से साहचर्य किया गया है जो सम्भवतः स्थानीय स्त्री देवतायें थीं। अन्धक वध का कारण उसका देवताओं से द्रोह ही नहीं था अपितु यह भी था कि उसने एक बार स्वयं पार्वती को घर ले जाने की चेष्टा की थी जब यह युद्ध प्रारम्भ

हुआ तो अंधक के शरीर की प्रत्येक बूंद से एक नया राक्षस पैदा हो गया इस प्रकार अंधकों की एक सेना तैयार हो गई। इससे देवताओं की सेना संकट में पड़ गई। ''अत उसके रक्त बिन्दुओं का पान करने के लिये शिव ने अनेक मातृकाओं 'लोक विश्वास की देवियों' को उत्पन्न किया। जो अंधक के रक्त को पृथ्वी पर गिरने से पहले ही चाट लेती थी। इसके बाद शिव ने सहज ही अंधक का वध कर दिया।[11]

वायु पुराण

वायु पुराण में कथा आती है कि देवी पहले आधी श्वेत तथा आधी काली थी फिर उन्होंने दो रूपों में विभक्त कर लिया श्वेत और काले रूप में। वायु पुराण में जब देवी पार्वती के रूप का स्तवन होता है प्रायः सदा ही उनके भीषण रूप की ओर संकेत किया जाता है जिस रूप में वह दानवों का संहार करती है और महामाता कहलाती है। वायु पुराण की दक्ष कथा के अनुसार दक्ष से शिव को आमन्त्रित न करने का कारण पूछा इस पर दक्ष ने उत्तर दिया कि वह ग्यारह रुद्रों को छोड़कर और किसी रूद्र को नहीं जानते और वह यज्ञ का सारा सम्मान विष्णु हो देगें, जो यज्ञ के पति हैं इसी बीच दक्ष पुत्री जो शिव के साथ विहाई गयी थी, स्वयं भगवान शिव से पूछती है कि उन्हें यज्ञ में क्यों नहीं बुलाया गया इस पर शिव ने उत्तर दिया कि देवताओं मे तो यह प्राचीन प्रथा थी कि वे यज्ञ में उन्हें कोई भाग नहीं देते थे और वह स्वंय इस स्थिति से सन्तुष्ट थे। आगे चलकर कथा में कहा गया है कि सती के अनुरोध करने पर शिव अपना अधिकार पाने के लिए कुछ प्रयास करने के लिए राजी हुये। सती का यज्ञ मे जाना तथा देह त्याग की सूचना पर दक्ष को दण्ड देने के लिए उन्होने एक भंयकर जीव वीरभद्र की सृष्टि की उधर सती के क्रोध से भद्रकाली की सृष्टि हुई जो वीरभद्र के सहायतार्थ उसके साथ गई तथा दक्ष यज्ञ विघ्वस किया। इस में यह भी कहा गया है कि शिव–पार्वती के दीर्घ काल तक सहवास करते रहने से इन्द्र के मन में भय उत्पन्न हुआ और उन्होंने अग्नि को उसमें विघ्न डालने के लिये भेजा। अग्नि गये और शिव का वीर्य पृथ्वी पर जा गिरा। इस पर पार्वती क्रोधित हो गई और दण्ड स्वरुप अग्नि को उस बीज को धारण करने को बाघ्य किया। इसके बाद अग्नि ने उसे गंगा को दिया और गंगा ने उसे शरवण नदी में 'डाल दिया–जहाँ स्कन्द का जन्म हुआ तथा कृतिकाओं ने उसे पाला।[12]

वराह पुराण

इसमें कहा गया है कि सती जिसने शिव को जल मग्न होने से पूर्व प्रतिरूप वरन किया था और जिस ब्रह्मा ने बाद में दक्ष को पुत्री रूप में दिया था इस बात से अत्यन्त दुःखी और कुपित हुई कि उनके पति ने अकारण ही उसके पिता के यज्ञ का ध्वंस कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप उसने अपने पति का परित्याग कर दिया और अग्नि में कूद कर प्राणांत कर दिया। पुराणों के ग्रन्थों में इस कथा के जो अन्य रूप है उनमें यह कथा ठीक विपरित है, क्योंकि उनमें यह कहा गया है कि सती को दुःख इस बात का हुआ था कि उनके पिता शिवद्रोही थे और उन्होंने शिव की निन्दा में अपशब्द कहे थे फिर भी कथा में थोड़ा बहुत साम्प्रादायिक रंगमान लेने पर भी इससे यह तो बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भ में शिव का तिरस्कार किया जाता है और इस तिरस्कार का कारण स्वयं उनका स्वरूप था। देवी की उपासना के सम्बन्ध में वराह पुराण में कहा गया कि जब उनका पार्वती के रूप में स्तवन होता है तब प्रायः सदा ही उनके भीषण रूप की और संकेत किया जाता है जिस रूप में वह दानवों का संहार करती है तथा महामाता कहलाती है।[13]

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि देवी स्वरूपा पार्वती को पुराणों में शिव प्रिया शिव अर्धांगिनी सौम्य व उग्र स्वरूपा के साथ–साथ महिषासुर मर्दिनी जो समाज कल्याण के लिए महामाता का रूप धारण कर सबका कल्याण करती है। जन मानस इन्हें अनुभव ही नहीं करता बल्कि संस्कार वश अपनी परम्पराओं में समाहित भी करता है। देवी केवल पारलौकिक और आधात्मिक रूप में हमारे सम्मुख नहीं है वह तो जनमानस की प्रत्येक गतिविधियों, व्यवहारिक जीवन में इस प्रकार छायी हुई है जैसे धर्म जीवन का आधार है।

अंत टिप्पणी

1. *विष्णु पुराण : 1/7/12–15*
2. *अग्नि पुराण : 96/100–106, 3/18, अध्याय : 74*
3. *वायु प्रदूषण : 9/82–86, 30/81, 72/20*
4. *लिंग पुराण : अध्याय – 72, 74–भाग–1*
5. *ब्रह्म पुराण : अध्याय – 34, 36, 71, 109, 128*
6. *ब्रह्माण्ड पुराण : अध्याय – 13, 204, भाग–1/27/10*
7. *मार्कण्डेय पुराण : अध्याय – 81, 82, 85, 83, 87, 91*
8. *ब्रह्मवैवर्त पुराण : भाग–2, 64/14, 19, 8, 44, 48, 92 भाग – 1–6/4, 6, 22*
9. *सौर पुराण : 2/14, 26, 19, 25/13–23, अध्याय – 16, 43, 38, 54, 49, 64 50/29/48*
10. *मत्स्य पुराण : अध्याय – 95, 64, 60, 155, 179, 154, 179/2 और आगे*
11. *डॉ0 गया चरण त्रिपाठी : वैदिक देवता, उद्‌व और विकास, पृष्ठ – 545*
12. *वायु पुराण : 9/82, 30/81, 72/20*
13. *वराह पुराण : 28/22 और आगे*